वोकल फॉर लोकल से झारखंड के उद्यमियों को मिलेगा बढ़ावा

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

आइआइएम रांची और अटल बिहारी वाजपेयी सेंटर फॉर लीडरशिप, पॉलिसी एंड गवर्नेंस की ओर से बुधवार को वेबिनार का आयोजन किया गया. विषय था- 'सोशल इंटरप्रेन्योर : वोकल फॉर लोकल'. परिचर्चा की शुरुआत करते हुए आइआइएम के निदेशक प्रो शैलेंद्र सिंह ने सामाजिक उद्यमिता पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि समय के साथ सामाजिक उद्यमी तेजी से उभर कर सामने आ रहे हैं. विभिन्न पेशे में इनकी भागीदारी देखी जा रही है. इसमें केंद्र सरकार की ओर से तैयार की गयी नीति और योजना का भी लाभ मिल रहा है. प्रो शैलेंद्र ने वेबिनार के माध्यम से झारखंड के लोगों के सामाजिक विकास के लिए स्थानीय उद्यमिता से जुड़े विकल्पों को बढ़ावा देने की बात कही. वेबिनार में शामिल वक्ताओं ने कहा कि वोकल फॉर लोकल को समर्थन देने से झारखंडी उद्यमियों को बढ़ावा मिलेगा.

लोकल उत्पादों को बढ़ावा दें: सत्र की दूसरी वक्ता अल्का सिंह (जो ग्रामीण महिलाओं को हस्तशिल्प में सशक्त कर रही है) ने भी संबोधित किया. उन्होंने कहा कि झारखंड के विभिन्न इलाके की 3000 ग्रामीण महिलाएं मधुबनी पेंटिंग, कपड़ों पर हाथ की कढ़ाई, जरदोजी, डेयरी, शहद समेत अन्य खाद्य उत्पादों को तैयार करने में अपना योगदान दे रही हैं. इससे उनका आर्थिक विकास हो रहा है. अल्का ने वेबिनार के माध्यम से लोगों को झारखंड के स्थानीय उत्पादों पर विश्वास करते हुए इन्हें खरीदने की बात की. कहा कि लोकल उत्पाद को बढ़ावा देने से राज्य के लोगों का विकास हो सकेगा.

कलाकार की कला को मिले पहचान

वेबिनार में बतौर मुख्य वक्ता उपस्थित माटी घर के संस्थापक वीरेंद्र कुमार ने कहा कि वर्तमान में पारंपरिक चित्रकला जैसे- सोहराई, खोवर, पैटकर, जादुपटुआ से जुड़े कलकारों को सशक्त करने का काम कर रहे हैं. दूसरे राज्यों की तुलना में झारखंड की स्थानीय कला से लोग परिचित नहीं हैं. सोहराई और मधुबनी को अब राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है, जबकि इसे देश के हर प्रांत तक पहुंचाने की जरूरत है. ऐसे में इस लोकल कला को वोकल करने के लिए युवाओं को इसकी ट्रेनिंग दे रहे हैं.

Prabhat Khabar, 08.10.2020, Pg. 09